साई व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका

www.vibrionics.org

'' जब आप किसी हतोत्साहित, निराष या रोग ग्रस्त व्यक्ति को देखते हो,
वहीं आपका सेवा क्षेत्र है ''..... श्री सत्य साई बाबा

खण्ड 1 प्रकाषन 1 सितंबर 2010

ॐ डा.जीत के. अग्रवाल की मेज से ॐ

प्रिय साई व्हाइब्रो चिकित्सक

इस पहली साई व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका को उन सभी चिकित्सकों ई–मेल द्वारा भेजा जा रहा है जिन्होंने अपने ई–मेल पते हमारे पास दर्ज कराए है। दुनिया के अलग अलग कोनो मे सेवारत व्हाइब्रो चिकित्सकों के साथ आपसी संपर्क कराने एवं हमारे बीच प्यार, जानकारी और ज्ञान बांटने तथा हौसला बढाने का जरिया, यह पत्रिका बन सकती है। हमे उम्मीद है कि यह पत्रिका व्हाइब्रियोनिक्स सेवा से संबंधित सूचनाए, सुझाव तथा भविष्य कि योजनाए प्रसारित करने का उपयोगी माध्यम बनेगी; साथ हि सवालों–जवाबों का औचित्य साधकर स्वास्थ्य एवं जीवनशैली से जुडी महत्वपूर्ण जानकारी का भी आदान प्रदान होगा। इस पत्रिका के माध्यम से नए केसेस की रोचक एवं प्रेरणा दायक जानकारी आप तक पहुंचाने की भी हमारी योजना है।

इस पत्रिका की पुनरावृत्ति कितनी अवधी मे होगी यह आपकी प्रतिपुष्टि (फीडबैक) पर निर्भर होगा। यह आपकी पत्रिका है। व्हाइब्रियोंनिक्स द्वारा किए गए सफल केसेस (मानव, जानवर अथवा वनस्पती) अथवा व्हाइब्रो चिकित्सालय या कैम्प जिसमे आपने हिस्सा लिया हो, उनके विस्तृत ब्यौरों का हमे इन्तजार होगा। व्हाइब्रो रेमेडी संबंधी अथवा इलाज से जुडे प्रश्न पूंछने के लिए या फिर कोई अन्य समाचार तथा उपयुक्त जानकारी भेजने के लिए, जिसे आप अन्य चिकित्सको के साथ बांटना चाहते है, हम आपको आमंत्रित करते है। हमारा ई–मेल पता है news@vibrionics.org

हम आशा करते है कि यह नया प्रयास आपके लिए रुचिपूर्ण एवं उपयुक्त साबित होगा। इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे व्हाइब्रोसेवकों का उत्साह बढाने एवं इस प्रयास को सफल करने मे सहायक सिद्ध होने वाली आपकी प्रतिपुष्टियों का हमे इन्तजार होगा।

सांई कि सेवा मे

जीत अग्रवाल

****

ॐ व्हाइब्रियोनिक्स केक को स्वामी के आशिर्वाद ॐ

ॐ गुरु पौर्णिमा – 25 जलै 2010 ॐ

मानव रुप लेकर अवतरित हुए भगवान श्री सत्यसांई बाबा ने, लगातार तीसरे वर्ष, संपूर्ण व्हाइब्रियोनिक्स टीम पर अपनी अनुकम्पा का वर्षाव करते हुए, उनके चरण कमलों मे सांई व्हाइब्रियोनिक्स केक तथा प्रसाद अर्पण करने का स्वर्णिम अवसर हमे प्रदान किया।

जुलै के प्रारंभ मे गुरुपौर्णिमा कि पूर्व तैयारीयों के लिए व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सकों कि एक टीम जपान से पर्ती पहुंची थी। स्थानीय स्वयंसेवकों कि के साथ मिलकर उस टीम ने प्रसाद के 15,000 पैकेट तयार किए। यूनानी भक्तों ने आकर्षक सांई व्हाइब्रियोनिक्स केक तयार किया। गुरु पौर्णिमा कि पूर्व संध्या के अवसर पर सांई कुलवंत सभागृह मे उपस्थित भक्तों को वह प्रसाद वितरीत करने का निर्देश स्वामी से पाते हि व्हाइब्रो टीम के सदस्य रोमांचित हो उठे।

गुरुपौर्णिमा के दिन विद्यार्थियों और भक्तों द्वारा गाए जा रहे गुरु के सुरीले भजनों की पार्श्वभूमि मे स्वामी का (यजुर्मन्दीर से) सांई कुलवंत सभागृह मे आगमन हुआ। स्वामी के द्वार मंडप (पोर्टीको) मे प्रवेश करते हि व्हाइब्रो टीम के सदस्योंने बाबा को गुलाब का पुष्प सविनय अर्पण किया। गुलाब का स्वीकार कर भगवान ने मधुर मुस्कान के साथ, फूलों के आकार वाली मोमबत्ती (इटली के भक्त द्वारा बनायी हुई) प्रज्वलित की और सांई व्हाइब्रियोंनिक्स केक काटकर उपस्थित सभी को हर्षित किया। स्वामी ने अन्य प्रसाद को भी आशिष प्रदान कर कलाकारों को अपने कर कमलों द्वारा प्रसाद के छोटे पैकेट वितरीत किए।

ॐ व्हाइब्रियोनिक्स की सफल चिकित्सा हेतु आवश्यक घटक ॐ

आम तौर पर मरीजों की व्हाइब्रियोनिक्स के प्रति उम्दी प्रतिक्रियाए मिल रही है। कभी कभी जब एकसी बिमारी के लिए समान काम्बो का प्रभाव भिन्न पाया जाता है, हम हैरानी मे पड जाते है । हमे इस बात का भी आश्चर्य होता है कि वही काम्बो एक चिकित्सक द्वारा दिए जाने पर बहोत जल्द असर दिखाता है, यद्यपि दूसरें चिकित्सक द्वारा दिए जाने पर उतना असरदार नही पाया जाता.....।

इस समीकरण के बहोत से कारण हो सकते है। सबसे महत्वपूर्ण है 'श्रद्धा'। हम 'चिकित्सक' की श्रद्धा का जिक्र कर रहे है – हर काम्बो की रोगनिवारक शक्ति पर श्रद्धा – स्वामी द्वारा सभी 108 काम्बोज मे भरी गई सूक्ष्म रुपी रोग निवारक शक्ति पर श्रद्धा। प्रारंभ हि से स्वामी ने प्रत्यक्ष आशिर्वाद देकर व्हाइब्रियोनिक्स प्रणाली को अनुग्रहित किया है। अनेको बार हमे स्वामी ने आश्वस्थ किया है कि इस प्रणाली की रोगनिवारण शक्ति के पिछे वें स्वयं है – हम केवल साधन मात्र है। वें हि रोगों का निवारण करते है। उनके हि वरदहस्त के मार्गदर्शन मे 108 काम्बोज आविष्कृत हुए और उनके उपयोग के लिए भी वें हि मार्गदर्शन करते है।

सभी चिकित्सकों को विश्वास रखना होगा कि स्वामी के संपूर्ण मानवजाति के प्रति करुणामय संकल्प का वे माध्यम मात्र है। जिस तरह चिकित्सकों कों विश्वास रखना महत्वपूर्ण है ठीक उसी तरह मरीजों को भी उनके सुनिश्चित रोग निवारण का विश्वास रखने हेतु प्रेरित करना उतना हि महत्वपूर्ण है। रोग निवारण हेतु प्रार्थना करने वाले किसी व्यक्ति से ईसा मसीह ने एक बार कहा था 'जाओ, तुम्हारे विश्वास के कारण तुम ठीक हो गए हो।' चिकित्सक और मरीजं के विश्वास के बल पर कुछ भी संभव है।

रोग निवारण प्रक्रिया का अगला सबसें प्रबल घटक है 'प्रेम'। चिकित्सक ने श्रद्धा और विश्वास के साथ काम्बो का चयन करने के बाद अपने दिल मे मरीज के प्रति प्रेम और सहानुभुति जागृत करनी चाहिए। रोग निवारण के लिए प्रेम किस तरह प्रेरित करता है इस बात को स्वामी ने अपने दिव्य संदेशों मे बार बार दोहराया है। सच्चाई यह है कि रोग निवारण के लिए दवां कि अपेक्षा प्रेम अधिक प्रभावकारी होता है। प्रत्येक चिकित्सक ने हर मरीज के लिए प्रेमपूर्वक प्रार्थना करनी है। हमे गर्व और गुमान न करते हुए पवित्र प्रेम का विस्तार करना है।

तीसरा घटक है भरौसा। चिकित्सक को भरौसा रखना होगा कि मरीजों को 'वही' दिया जा रहा है जिसकी उन्हे आवश्यकता है। कुछ मरीज काम्बो के सेवन से पूरी तरह ठीक हो जाएंगे जब कि अन्य मरीजों को शायद उतना फायदा न हो। हमे इस बात को समझना होगा कि एक मानव के नाते हम बिमारी को दैहिक स्तर पर हि देख सकते है। हमे मरीज, रोग और रोग निवारण आकलन केवल दैहिक स्तर पर हि होता है। शारीरीक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य हेतु ईश्वर पर एवं मरीजों को दी जा रही दवां पर भरौसा करना ही हमारे हाथों मे है।

स्वामी हमेशा कहते है "Do your best, Let Sai do the rest !" हमारे लिए बस इतना काफी है कि स्वामी द्वारा दी गई इस सेवा को श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के साथ हम करते रहे तथा परिणामों को स्वामी पर छोड दे।

****

ॐ सम्मिश्रण की सफलता का व्यक्ति वृत्त (केस हिस्टरीज़) ॐ

1. पल्मनरी थ्रोम्बो–एम्बोलीजम

31 वर्षिय महिला, खून जमने(thrombus) की बिमारी से पिडीत थी जिसके कारण उनकी दोनो फुफ्फुसीय रक्तवाहिनीयों मे अवरोध पैदा हो गया था। उन्हे सांस लेने मे तकलीफ हो रही थी और वें जरा भी कार्य करने मे असमर्थ थी। उन्हे आपातकालीन चिकित्सा हेतु अस्पताल ले जाया गया परंतु उनके परिवार के पास पर्याप्त पैसे न रहने के कारण वें उनकी शल्य चिकित्सा करवाने मे असमर्थ थे। निराश होकर वें व्हायब्रो चिकित्सक से मिले। उन्हे निम्न काम्बो दिया गया –

CC2.3 Tumours and growths + CC3.1 Heart Tonic + CC19.3 Asthma + CC19.4 Asthma emergency ...QDS.

एक माह मे वह महिला पूरी तरह स्वस्थ हो गई। उनके डाक्टरों कों बडा आश्चर्य हुआ जब एन्जिओग्राफि करने पर पाया गया कि उनकी सारी रक्तवाहिनीयां खुल चुकि है। खून के जमने का कही कोई निशान हि नही था।

2. मज्जातन्तू मे बनी गाठों का ठीक होना

51 वर्षिय पुरुष मरीज की बिमारी का डाक्टरों द्वारा मज्जातन्तू का कर्करोग बताकर निदान किया गया। वें सालभर से शय्याग्रस्त थे तथा उनके कांधे के जोड मे फ्रैक्चर हुआ। डाक्टरों ने उनके ठीक होने की उम्मीदें छोड दी। मरीज द्वारा व्हाइब्रो चिकित्सक से संपर्क करने पर उन्हे निम्न काम्बो दिया गया –

CC2.1 Cancer + CC2.2 Pains of Cancer + CC2.3 Tumours and growths + CC12.1 Adult Tonic + CC20.2 Skeletal Pain + CC20.3 Arthritis + CC20.4 Muscles and supportive tissues + CC20.5 Spine + CC20.6 Osteoporosis + CC20.7 Fractures

केवल एक सप्ताह मे हि मरीज के स्वास्थ्य मे सुधार होने लगा। पिछले एक वर्ष से शय्याग्रस्त वह मरीज पंधरा दिनो मे उठकर चलने फिरने लगे। चार माह बाद वें पहले कि तरह कार्य पर जाने लगे तथा उनके mBAND विश्लेषण मे कर्करोग का कोई निशान न था।

3. गले का लकवा

54 वर्षिय पुरुष मरीज की वाणी गले के पक्षाघात (लकवा) कि वजह से चली गई। हालांकि उन्हे मधुमेह नही था फिरभी डाक्टरों ने सोचा कि यह 'silent hypertension' के कारण हुआ होगा। मरीज को नली द्वारा पेट मे अन्न दिया जाने लगा। मरीज के बेटे ने व्हाइब्रो चिकित्सक से भेंट कि, मरीज के लिए निम्न काम्बो दिया गया –

CC18.1 Brain & Memory Tonic + CC18.4 Stroke + CC19.7 Throat ...QDS

मरीज के बेटे ने व्हाइब्रो कि गोलीयां मौखिक खुराक के रुप मे हि खिलायी और केवल तीन हि दिनों मे मरीज निगल पा रहा था तथा बोल भी पा रहा था। मरीज को अब भी स्मृतिनाश होता है परंतु व्हाइब्रो कि खुराक जारी है और पूरी तरह स्वस्थ होने मे सहायता हेतु उनकी फिजिओथेरेपी भी चल रही है।

4. यकृत के कर्करोग से पिडित मरीज का इलाज

67 वर्षिय महिला को यकृत के कर्करोग का निदान किया गया। पेट मे पानी भी जमा होने के साथ साथ अनेक जटिलताओं से मरीज ग्रस्त थी। पेट का पानी नियमित अंतराल पर निकालना पडता था। दोनो टखनों के जोडों मे सूजन भी उभरी और पित्ताशय की थैली भी फैल गयी। उच्च रक्तचाप तथा मधुमेह से पिडीत यह महिला बदहजमी तथा निद्रानाश से भी परेशान थी। डाक्टरों ने उन्हे आखिरी तीन माह की साथी बताया। उन्हे निम्न काम्बो दिया गया–

CC2.1 Cancer + CC2.2 Pains of Cancer + CC2.3 Tumours and growths + CC4.2 Liver & Gall Bladder Tonic + CC6.3 Diabetes + CC12.1 Adult Tonic + CC19.3 Asthma + CC19.4 Asthma emergency + CC20.3 Arthritis + CC20.6 Osteoporosis

उपरोक्त काम्बो के एक सप्ताह तक सेवन के बाद हि उन्होने एलोपैथि की बहोतसी दवांओं का सेवन बंद कर दिया। नउ माह बाद उनके स्वास्थ्य मे सुधार हो कर उनके पेट मे पानी भरने वाली समस्या दूर हो गई तथा उनकी रक्तशर्करा का स्तर सामान्य हो गया। डाक्टरों के अनुमानित तीन माह की अपेक्षा उन्होंने अगले दो वर्ष तक सक्रिय जीवन ज्ञापन करने के बाद शांतिपूर्वक अपना पार्थिव देह त्याग दिया।

.

****

७ सवालों के जवाब ७

सभी की जानकारी एवं इलाज दौरान सहायता हेतु, विभिन्न चिकित्सकों द्वारा डा. अग्रवाल को भेजे गए काम्बो संबंधी अथवा व्हाइब्रो इलाज से जुडे सवालों के जवाब हम प्रत्येक व्हाइब्रोपत्रिका मे सामिल करेंगे।

1. **प्रष्न:** कुल कितने व्हाइब्रो चिकित्सक है?

   उत्तरः निःशुल्क व्हाइब्रियोनिक्स इलाज दुनिया के 81 देशों मे 4000 व्हाइब्रो चिकित्सकों द्वारा किया जा रहा है।

   प्रश्नः मरीज की लंबी अवधी की (क्रोनिक) बिमारी के व्हाइब्रो इलाज दौरान उसे बुखार आने पर क्या मुझे क्रोनिक बिमारी की दवां रोककर उसे एक्युट बिमारी का काम्बो देना चाहिए?

   उत्तरः क्रोनिक बिमारी की दवां 1 या 2 दिन तक रोक देने से एक्युट बिमारी जल्दी ठीक होने मे मदद मिलेगी। यद्यपि क्रोनिक बिमारी के काम्बो के साथ साथ एक्युट बिमारी का काम्बो लिया जा सकता है। कुछ मरीज दोनों हि खुराक साथ साथ लेना पसंद करते है।

   प्रश्नः मै 'कर्म' से उपजी बिमारी के लिए कौनसा काम्बो दे सकता हुं?

   उत्तरः मरीज की बिमारी को 'कर्म' के साथ जोडना ठीक नही है। 'कर्म' को मरीज और भगवान के बीच छोड दिजिए। इस बात का फैसला करना हमारा काम नही है, हमारा काम है मरीज की प्रेमपूर्वक सेवा करना। हमेशा कि तरह हर मरीज का इलाज किजिए।

Do you have a question for Dr. Aggarwal? Send it to him at news@vibrionics.org

****

ॐ रोग निवारण कर्ता के दैवी वचन ॐ

ॐ DIVINE WORDS FROM THE HEALER OF HEALERS ॐ

'' संयम के साथ आहार लिजिए और लंबी आयु पाइए। ऋषि मुनियों ने युगों युगों से यही उपदेश मानवजाति को दिया है। इस उपदेश की अक्सर अनदेखी की जाती है। लोग अन्न का इतना अधिक सेवन कर लेते है कि वें अपने आसन से उठ भी नही पाते। अमीर लोग शाही खाना खाकर/खिलाकर अपनी तथा दूसरोंकि पचन संस्था बर्बाद करने मे गर्व महसूस करते है। शारिरिक स्वास्थ्य को एक अनमोल खजाना समझने वाले लोग केवल सात्विक अन्नहि ग्रहण करते है।

सत्य सांई बाबा, सत्य सांई वचनामृत, खंड XI

मानवीय जीवन तीन प्रकार की शक्तियों के बल पर कार्य करता है, विकिरण, कंपन और पदार्थजन्य बल। इसे प्रकृति कहते है। प्राण शक्ति कंपन निर्माण करती है तथा प्रज्ञा शक्ति इन कंपनों को दिशा प्रदान करती है, यही है चैतन्य। अतः मानव जीवन चेतना, शक्ति और पदार्थ का संयोंजन (काम्बिनेशन) है। मानव इस सच्चाई को जाने बिना शरीर को हि सर्व शक्तिमान समझने कि भूल कर केवल शरीर का हि ख्याल रखने की सदैव चेष्टा करता है।

आप सभी जानते है कि अन्न के मामले मे अमरीका एक अत्यंत समृद्ध भूमि है। वहां अन्न कि कोई कमी नही है। वहां के लोग आवश्यकता से अधिक आहार ग्रहण कर ऐशोआराम की जिंदगी बिताते है। परंतु यह भी पाया गया है कि उस देश मे दिल की बिमारी के कारण मरने वालों कि संख्या अन्य देशों कि तुलना मे बहोत अधिक है।

स्वीडन भी एक समृद्ध युरोपिय राष्ट्र है और वहां कि सरकार भी जनता की सुखसुविधाओं का खूब ख्याल रखती है। इतनी दौलत होने के बावजूद भी वहां खुदखुषि करने वालों तथा तलाकशुदा लोगो कि संख्या अन्य देशों कि तुलना मे बहोत अधिक है। इसकी क्यां वजह हो सकती है? इसके लिए भौतिक और शारिरिक सुख सुविधाओं कि कमी जिम्मेदार नही है बल्कि आध्यात्मिक नजरीए का अभाव हि इसका कारण है। वें लोग स्वयं को शरीर समझते है जो अस्थाई और नश्वर होता है तथा वें स्थाई एवं अमर आत्मा के विषय मे अनभिज्ञ रहते है। ये लोग एक बनावटी जीवन जीते है।''

सत्य सांई बाबा, सत्य सांई वचनामृत, खंड XXVI

'' मानव और समाज के बीच का रिश्ता ठीक वैसा हि है जो मधुमख्खी और फूल के बीच का होता है। मां का दूध पीकर पलने वाले शिशु और फूलों से शहद खाकर जीने वाली मधुमख्खी की तरह मानव ने प्रकृति के दिए इस उपहार का आनंद लेना चाहिए। चिरकाल से हि मानव नकारात्मक कल्पनाओं मे डूबा हुआ है; ठीक उस लोभी व्यक्ति कि तरह जिसने सारे सोने के अंडे एक साथ पाने के लिए सोना देने वाले मंगूस को हि मार डाला। प्रकृति कि देन का असीम दोहन करते हुए उस लोभी व्यक्ति जैसा व्यवहार वैज्ञानिकों द्वारा आज खुले आम हो रहा है जो विनाशकारी असंतुलन निर्माण कर भूकम्प जैसी मानव संहारक आपदाओं को आमंत्रित कर रहा है। इसके लिए हम विज्ञान को दोषी नही ठहरा सकते। किसी भी खोज का विवेकहीन उपयोग करने वाले वैज्ञानिक दोषी है। प्राकृतिक संपदा के अति शोषण से होने वाले विपरीत परिणामों का अंदाजा लगाने मे वें नाकामयाब हुए है।''

सत्य सांई बाबा, सत्य सांई वचनामृत, खंड XXVI

****

ॐ स्वास्थ्य नुस्के ॐ

(HEALTH TIPS)

क्यां आप भोजन के साथ शीतपेयों के सेवन मे रुचि रखते है? जों लोग भोजन के साथ ठंडे पानी अथवा शीत पेयों को ग्रहण करना पसंद करते है उन्हे 'खतरे' को पहचानना होगा। यद्यपि भोजन के साथ अथवा भोजन के तुरंत बाद शीत पेय का सेवन आनंद दायक हो सकता है परंतु यह ठंडा पेय चरबी युक्त अन्न पदार्थों को जमा देता है तथा उनकी पाचनक्रिया की गती धीमी कर देता है। इस 'गाढे माल' की पेट के एसिड के साथ होने वाली प्रक्रिया के फलस्वरुप, आंत द्वारा इसका अवशोषण अधिक शीघ्र गती से होता है। इस पदार्थ का आवरण आंत के इर्द गिर्द बन जाता है जिसका रुपांतरण चरबी मे होकर कर्करोग की संभावना बढ जाती है। भोजन के बाद गरम पानी अथवा गरम सूप का सेवन बहोत फायदेमंद होता है। चिनी तथा जापानी लोग भोजन के साथ शीत पेय नही बल्कि गरम चाय पिते है। अब वों समय आगया है कि हम उनकी इस आदत को अपनाए।

दिल के दौरे संबंधी गंभीर सूचनाः महिलाओं के लिए यह जानना जरुरी है कि दिल के दौरे की हर पूर्व सूचना बायीभुजा का दर्द हि नही होती। उन्हे दिल के पहले दौर मे शायद छाती मे दर्द भी नही होगा। मिचली और अत्यधिक पसीना सामान्य लक्षण होते है। जबडे के आसपास होने वाले तेज दर्द से सचेत रहिए। नींद मे पडे दिल के दौरे के 60 प्रतिशत मरीज उठ हि नही पाते। जबडे मे दर्द अगर हो तब गहरी नींद मे सोया व्यक्ति भी जाग जाएगा। हमे सावधानी और जागरुकता बरतनी चाहिए। इस बात को जितने ज्यादा लोग जानेंगे उतनी हि जीव रक्षा कि उम्मीदे बढ जाएगी।

If you know of Sai Vibrionics healers who you think would be interested to receive the *Sai Vibrionics Newsletter* but have not registered their e-mail address with us, tell them to make contact at news@vibrionics.org and we will add them to our e-mail address list.

Visit our website at www.vibrionics.org

Jai Sai Ram!

साई व्हाइब्रियोनिक्स...वहन करने योग्य श्रेष्ठ चिकित्सा सहायता की ओर – मरीजों के लिए निःषुल्क